फरीदाबाद

# मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 192 जून 2004

**कहत कबीर**

मण्डी के विरोध के लिये,
मनुष्य के मण्डी में माल बन
जाने के विरोध के लिये
विज्ञान की, साइन्स की आलोचना
एक प्रस्थान-बिन्दू है।

# मसला यह व्यवस्था है

## इस-उस नीति, इस-उस पार्टी, यह अथवा वह लीडर की बातें शब्द-जाल हैं, शब्द-आडम्बर हैं

✱ राजे-रजवाड़ों के दौर में, बैगार-प्रथा के दौर में मण्डी-मुद्रा का प्रसार कोढ़ में खाज समान था। छोटे-से ग्रेट ब्रिटेन के इंग्लैण्ड-वेल्स-स्कॉटलैण्ड-आयरलैण्ड में भेड़ों ने, भेड़-पालन ने मनुष्यों को जमीनों से खदेड़ा। कैदखानों में जबरन काम करवाने, दागने, फाँसी देने के संग-संग बेघरबार किये गये लोगों को दोहन-शोषण के लिये दूरदराज अमरीका-आस्ट्रेलिया जैसे स्थानों पर जबरन ले जाया गया। उन स्थानों के निवासियों के लिये तो जैसे शामत ही आ गई हो। गुलामी जिनकी समझ से बाहर की चीज थी उन अमरीकावासियों के कत्लेआम किये गये। अफ्रीका से गुलाम बना कर लोगों को अमरीकी महाद्वीपों में काम में जोता गया। ✱ फैक्ट्री-पद्धति ने मण्डी-मुद्रा के ताण्डव को सातवें आसमान पर पहुँचा दिया। मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन वाली फैक्ट्री-पद्धति को भाप-कोयले ने, भाप-कोयला आधारित मशीनरी ने स्थापित किया। इसके संग दस्तकारी और किसानी की मौत, दस्तकारी-किसानी की सामाजिक मौत आरम्भ हुई। छोटे-से ग्रेट ब्रिटेन के कारखानों में 6-7 वर्ष के बच्चों, स्त्रियों और पुरुषों को सूर्योदय से सूर्यास्त तक काम में जोता गया और ... और बेरोज़गार बने-बनते लाखों लोगों के लिये अनजाने, दूरदराज स्थानों को पलायन मजबूरी बने। ✱ फ्रान्स-जर्मनी-इटली... में फैक्ट्री-पद्धति के प्रसार के संग वहाँ भी आरम्भ हुई दस्तकारी-किसानी की सामाजिक मौत लाखों को मजदूर बनाने के संग-संग यूरोप से बड़े पैमाने पर लोगों को खदेड़ना भी लिये थी। अमरीका.... आस्ट्रेलिया... लोगों से "भर गये"। ✱ बिजली ने रात को भी काम के लिये खोल दिया। फैक्ट्री-पद्धति ने हमारी नींद ही नहीं उड़ाई बल्कि मारामारी का वह अखाड़ा भी रचा कि 1914-19 के दौरान ढाई करोड़ लोग और 1939-45 के दौरान पाँच करोड़ लोग तो युद्धों में ही मारे गये। ✱ अब फैक्ट्री-पद्धति में यह इलेक्ट्रोनिक्स का दौर है। फैक्ट्री-पद्धति का प्रसार पृथ्वी के कौने-कौने में और सामाजिक जीवन के हर क्षेत्र में हो रहा है। इस दौर में एशिया-अफ्रीका-दक्षिणी अमरीका में दस्तकारी-किसानी की सामाजिक मौत तीव्र गति से हो रही है। भारत के, चीन के करोड़ों तबाह दस्तकार-किसान कहाँ जायें? इलेक्ट्रोनिक्स द्वारा दुनियाँ-भर में बेरोजगार कर दिये गये, बेरोजगार किये जा रहे करोड़ों मजदूर कहाँ जायें?

●इलेक्ट्रोनिक्स वाला आटोमेशन विश्व-भर में करोड़ों मजदूरों को बेरोजगार कर रहा है, करोड़ों नौकरियाँ समाप्त कर रहा है।

●भारत, चीन, पाकिस्तान, बंगलादेश, इन्डोनेशिया, मिश्र, नाइजीरिया, अरजेन्टीना, मैक्सिको... में दस्तकारी-किसानी की तीव्र गति से हो रही सामाजिक मौत मण्डी में टके सेर इन्सान उपलब्ध करवा रही है।

●विश्वव्यापी है वेतन गिरना, काम के घण्टे बढना।

●जीवन स्तर के लगातार गिरते जाने के संग-संग लोगों की बड़ी भारी संख्या लम्पटों में तब्दील हो रही है।

इन हालात में ऐसे लगता है कि सब कुछ पलट गया है: परदेस में जबरन ले जाये जाने की जगह लोग विदेश जाने के लिये लाखों रुपये देने के लिये एजेन्ट ढूँढते हैं; मण्डी के माफिक बच्चों को ढालने के लिये विद्यालयों का व्यापक निर्माण और उन में मुफ्त प्रवेश-पढाई के संग वजीफे देने की जगह भारी फीस व उससे भी भारी डोनेशन वाले दाखिलों के लिये मारामारी है; काम के घण्टे कम करवाने-एक व्यक्ति को 8 घण्टे काम की इतनी तनखा कि परिवार पल सके के लिये संघर्ष की जगह ओवर टाइम के लिये-ड्युटी पश्चात पार्ट टाइम काम के लिये-धन्धे के लिये-पति व पत्नी दोनों की नौकरी के लिये लालसा ..... ऐसे में यह लग सकता है कि लोग व्यवस्था-पोषक बन गये हैं। लग सकता है कि उनींदे लोग मृत्यु की ओर चल रहे हैं। लग सकता है कि लोग पगला गये हैं....

**वर्तमान समाज व्यवस्था : मण्डी के लिये उत्पादन, मजदूरों के जरिये मण्डी के लिये उत्पादन।**

दरअसल जन्मस्थल पर रिश्तों की टूटन के बावजूद विस्थापन आज पहले से भी अधिक पीड़ादायक हो गया है क्योंकि मण्डी वाले क्षणिक-सतही-छिछले सम्बन्ध नये स्थान पर जीवन को अधिक सिकोड़ देते हैं और फिर बढती असुरक्षा में पहचान की राजनीति "बाहरी" के लिये अतिरिक्त डर लिये है। स्कूल आज पहले से अधिक यातना-यन्त्रणा के केन्द्र बने हैं क्योंकि बचपना ढाई साल की आयु तक सिकोड़ा जा रहा है, लोहे-सीमेन्ट के जंगल व सड़कें बच्चों के स्थानों को लील रहे हैं तथा इलेक्ट्रोनिक रफ्तार व सटीकता के लिये तन-मन-मस्तिष्क पर इतना बोझ लाद दिया गया है कि समय व उर्जा का अभाव बालपन को मात्र कल्पना बना रहा है। सीधे-सच्चे व्यवहार के लिये नौकरी/धन्धा पहले भी नहीं थे पर आज तो हद से ज्यादा टेढापन भी नौकरी पाने और नौकरी/धन्धा बचाये रखने के लिये पर्याप्त नहीं रहा। बोझ से दोहरे-तिहरे होते तन, सूचनाओं के समुद्र में डूबते मस्तिष्क और टेढेपन से लहुलुहान होते मन के संग चालीस की आयु से पहले ही लोग बूढे हो रहे हैं, नौकरी के लिये नाकारा हो रहे हैं। इन सब का काफी-कुछ अहसास प्रत्येक को है। इसलिये वास्तव में वर्तमान में लोगों में आत्मघाती प्रवृतियाँ इस व्यवस्था में नीचे खिसकने से बचने-टिके रहने-कुछ स्थिरता प्राप्त करने-कुछ चढने के प्रयास हैं जिनकी नियति ही आमतौर पर असफलता है।

**वर्तमान समाज व्यवस्था में रोजगार अपने अन्दर बेरोजगारी लिये बैठा है, भयंकर तबाही लिये बैठा है।**

असफलता दर असफलता पूरे संसार में निराशा दर निराशा का माहौल निर्मित कर रही हैं। प्रलय तो आनी ही है... सब मरेंगे... पाप बढ जाते हैं तब तबाही लाजमी -- इस प्रकार की व्यापक स्तर पर बातें वर्तमान समाज व्यवस्था के प्रति असन्तोष का तीखापन दर्शाती हैं। इस समाज व्यवस्था से निराशा और इस निराशा का बढना शुभ लक्षण है! लेकिन दिक्कत तब होती है जब हम नीचे खिसकने (**बाकी पेज तीन पर**)

मजदूर लैब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद-121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

# कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की

**कानून : ●37–40 दिन काम करने पर 30 दिन की तनखा, अगले महीने की 7–10 तारीख तक दे ही देना; ●8 घण्टे की ड्युटी, तीन महीने में 50 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम काम नहीं, ओवर टाइम का भुगतान वेतन की दुगनी दर से; ● सप्ताह में एक छुट्टी व 8 घण्टे प्रतिदिन ड्युटी पर महीने में अकुशल श्रमिक-हैल्पर की कम से कम तनखा 2244 रुपये** (हरियाणा) व 2784 रुपये (दिल्ली), कुशल मजदूर की 2505 रुपये (हरियाणा) व 2950 रुपये (दिल्ली), उच्च कुशल मजदूर 2804 (हरियाणा) व 3208 रुपये (दिल्ली)

**सी.एम.आई. मजदूर** : " प्लॉट 71 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में मार्च और अप्रैल की तनखायें आज 9 मई तक नहीं दी हैं।"

**कन्सोलिडेटेड कॉयन कम्पनी वरकर** : " 13/2 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 10 घण्टे की शिफ्ट है – सुबह 8½ से शाम 6½ बजे तक। फिर 6½ से रात 8½ तक काम करवाते हैं और इसे दो घण्टे ओवर टाइम काम कहते हैं तथा इसके सिंगल रेट से पैसे देते हैं। हर रोज 10 घण्टे ड्युटी के बदले हैल्पर को दो हजार रुपये महीना देते हैं – किसी दिन छुट्टी नहीं, संसद के लिये चुनाव वाली 10 मई को भी कम्पनी ने छुट्टी नहीं दी। प्रोविडेन्ट फण्ड नहीं, ई.एस.आई.नहीं – चोट लगने पर मजदूर अपने पैसों से इलाज करवायें।"

**ब्रॉन लैबोरेट्री मजदूर** : " प्लॉट 13 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में चन्द वरकर ही परमानेन्ट हैं, 80 प्रतिशत से अधिक मजदूर ठेकेदारों के जरिये रखे गये हैं। स्थाई मजदूरों को अप्रैल की तनखा आज 22 मई को जा कर दी जबकि अन्य वरकरों को अभी भी नहीं दी है।"

**ए.पी. इंजिनियरिंग वरकर** : " प्लॉट 86 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों को 1300 रुपये महीना तनखा देते हैं – भर्ती के समय 1400 बोलते हैं और 100 रुपये कम्पनी के कैशियर खा जाते हैं। ऑपरेटरों को 1600-1700 रुपये महीना तनखा है – उन से भी 100 रुपये खा जाते हैं। फैक्ट्री में करीब 250 मजदूर हैं जिनमें से 10-12 ही स्थाई हैं। ई.एस.आई. व पी. एफ. इन 10-12 मजदूरों के ही हैं बाकि किसी के नहीं। चोट लगने पर कैजुअलों को इलाज के लिये पैसे नहीं देते – 100 रुपये एडवान्स माँगो तो वह भी नहीं देते। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से तो देते ही हैं, ओवर टाइम के घण्टों में भी भारी गड़बड़ करते हैं – कुल घण्टों में से आधे तक खा जाते हैं।"

**एसोसियेट होम अप्लाइन्सेज मजदूर** : "प्लॉट 1 सैक्टर-56 स्थित फैक्ट्री में कैजुअल वरकरों को 1200-1300-1500 रुपये महीना वेतन है – ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। स्थाई वरकरों को बात-बात पर हिमाचल में स्थानान्तरण की धमकी देते हैं।"

**के.के. कोहली ब्रॉदर्स वरकर** : " 14/5 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 500 मजदूर काम करते हैं जिनमें से 70 ही स्थाई हैं। फैक्ट्री में 5 ठेकेदार हैं और 12 घण्टे काम के बदले 80 रुपये दिहाड़ी देते हैं। तनखा के समय कोई छूट गया तो छूट गया– कुछ मजदूरों की तो तीन महीनों की तनखायें बकाया हो गई हैं।"

**यूरोकॉन ग्लोबल मजदूर** : " प्लॉट 5 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में कैजुअलों व ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को 1300 रुपये महीना तनखा देते हैं। कैजुअलों को रोज ओवर टाइम, रविवार को भी और पैसे सिंगल रेट से। काम ज्यादा होने पर पूरी रात भी रोक लेते हैं – 20 रुपये रोटी के देते हैं। ओवर टाइम के हिसाब में बहुत गड़बड़ करते हैं – 1500 रुपये बनते हैं तो 500 देते हैं। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

**प्रेसलाइन वरकर** : "प्लॉट डी-262 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों को 1200 रुपये महीना तनखा देते हैं – ई.एस.आई. नहीं, प्रोविडेन्ट फण्ड नहीं।"

**अल्फा टोयो मजदूर** : " प्लॉट 9-एच सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री का संचालन एस्कोर्ट्स के साहबों की पत्नियाँ करती हैं और यहाँ कैजुअल वरकरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। प्रतिदिन 12 घण्टे के बदले महीने में 2150 रुपये बताते हैं पर इन में से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काट लेते हैं।"

**शिवालिक ग्लोबल वरकर** : " 12/6 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में मार्च की तनखा 10 मई को जा कर दी। अप्रैल का वेतन आज 18 मई तक नहीं दिया है।"

**डी.एस. बोहिन मजदूर** : " प्लॉट 88 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं, रविवार को भी। फैक्ट्री में करीब 150 वरकर हैं जिन में से 15 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। हैल्परों को 1600 रुपये तनखा देते हैं। एक हैल्पर को 5-6 मशीनों पर माल देना पड़ता है – पूरे समय भागमभाग रहती है और ऊपर से गालियाँ। पानी पीने तक की फुरसत नहीं – फोरमैन पीछे-पीछे आ जाते हैं। नये हैल्पर जल्दी ही छोड़ जाते हैं और उनके महीना-बीस दिन के पैसे आमतौर पर कम्पनी नहीं देती – फैक्ट्री गेट पर कम्पनी अधिकारी झूठे आरोप लगा कर डराते हैं ताकि वरकर पैसे लेने आयें ही नहीं।"

**एस्कोर्ट्स ऑटोकम्पोनेन्ट्स वरकर** : "अप्रैल की तनखा आज 19 मई तक हमें नहीं दी है।"

**इन्जेक्टो मजदूर** : " 20/5 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में उत्पादन कार्य जोरों पर है – कम्पनी को 5 करोड़ रुपये का कर्ज मिल गया है। लेकिन हमारी बकाया तनखायें देने की बात ही नहीं है। दिसम्बर 03, जनवरी, फरवरी, मार्च और अप्रैल की तनखायें हमें आज 19 मई तक नहीं दी हैं।"

**श्याम पेन्ट्स वरकर** : " सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में अप्रैल का वेतन आज 15 मई तक नहीं दिया है।"

**क्लच आटो मजदूर** : "12/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में अप्रैल की तनखा आज 18 मई तक हमें नहीं दी है।"

### *मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये:*

** अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढ़वाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते। * बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढ़वाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये। * बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये- पैसे की दिक्कत है।*

*महीने में एक बार छापते हैं, 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।*

## और बातें यह भी

**एस.पी.एल. मजदूर** : " प्लॉट 21-22 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से देते हैं। कम्पनी का उत्पादन खरीदने वाले बाहर वाले बायर ओवर टाइम के पैसे डबल रेट से देने को बोले। कम्पनी ने कुछ मजदूरों को डबल की दर से पैसे दिये पर फिर वे पैसे तनखा में से काट लिये। बाकी मजदूरों को पैसे देने और फिर वापस लेने की बजाय कम्पनी ने बस हस्ताक्षर डबल रेट पर करवा लिये।"

**जगसन पाल फार्मास्युटिकल वरकर** : "12/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में जनवरी 04 से देय डी.ए. अप्रैल की तनखा में भी नहीं दिया गया है।"

**भारत गियर मजदूर** : "ख्वाजा सराय के पास रेल लाइन की बगल में स्थित फैक्ट्री में 2 साल बाद वेतन में वृद्धि की है परन्तु सब मजदूरों की नहीं। कुछ वरकरों को कम्पनी ने पत्र दिया है जिसमें कहा है कि काम ठीक नहीं करते, व्यवहार ठीक नहीं है और यह लिख कर वेतन में वृद्धि नहीं की है।"

## एस्कोर्ट्स (पेज तीन का शेष)

में और उसके बाद शॉकर डिविजन में ... शॉकर में एक लीडर ने एक ग्रेज्युएट ट्रेनी को थप्पड़ मारा, सस्पैण्ड हुआ और मैनेजमेन्ट की शर्तें मनवा कर महीने बाद ड्युटी पर लौट आया। अब ऐसा ही रेलवे डिविजन में 871 रुपये वाले मामले में लगता है। इन सब के जरिये तनखा बढाने की बात टाली जा रही है।"

# नूकेम प्लास्टिक

**नूकेम प्लास्टिक डिविजन मजदूर :** "प्लॉट 54 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 20 मई को मैनेजमेन्ट ने 5 यूनियन नेताओं पर परसनल मैनेजर को पीटने का आरोप लगा कर उन्हें निलम्बित किया और पुलिस बुला कर फैक्ट्री गेट से गिरफ्तार करवा दिया। यह पौने बारह बजे हुआ और एक बजे मजदूरों ने फैक्ट्री में काम बन्द कर दिया। चार बजे की शिफ्ट वालों से मैनेजमेन्ट ने फैक्ट्री में प्रवेश से पहले शर्तों पर हस्ताक्षर करने को कहा और दस्तखत करने से इनकार पर सब मजदूरों का गेट रोक दिया गया। गिरफ्तार लोग 20 मई को ही थाने से जमानत पर छुड़ा लिये।

"फैक्ट्री में प्लास्टिक का पाउडर बनता है और हर महीने 250-300 टन माल विभिन्न जगहों को भेजा जाता है जहाँ पर बिजली के स्विच, प्लास्टिक की कुर्सी, कप-प्लेट आदि बनाने में प्रयोग होता है। यहाँ 15 वर्ष पूर्व 600 मजदूर काम करते थे जबकि आज मात्र 242 स्थाई और 3 कैजुअल वरकर हैं। काम का बोझ बहुत बढा रखा है – पहले जहाँ एक मजदूर 500 किलो पाउडर छानता था अब उसी से 800-900 किलो छनवाते हैं, जबरदस्ती काम करवाते हैं। जब पाँचों मिक्सचर प्लान्ट चलते हैं तब वहाँ रहना बहुत भारी पड़ता है। फैक्ट्री में फोरमैलडिहाइड और अमोनिया गैस से परेशानी होती है पर पहले जो गुड़ दिया जाता था वह भी कम्पनी ने बन्द कर दिया है। पाउडर और गैस के कारण साँस की बीमारियाँ हो जाती हैं। फैक्ट्री में 10-15 चार्जहैण्ड को छोड़ कर बाकी सब मजदूर हैल्पर हैं – मशीनें चला रहों, बीस वर्ष से काम कर रहों, कोयले वाला बॉयलर तक चला रहों को कम्पनी अकुशल मजदूर, हैल्पर कहती है। नूकेम मशीन टूल्स में तो मजदूरों को कई महीनों की तनखायें दी ही नहीं हैं, इधर साल-भर से नूकेम केमिकल डिविजन में भी तनखा देर से देने का सिलसिला जारी है – अप्रैल की तनखा 15 मई को दी। लेकिन 20 मई को विस्फोट इन कारणों से नहीं हुआ बल्कि वैलफेयर सोसाइटी में घोटाले को ले कर हुआ।

"नूकेम केमिकल डिविजन में करीब 25 वर्ष पहले वैलफेयर सोसाइटी शुरू की गई थी। आरम्भ में 10 रुपये, फिर 20 रुपये और फिर 50 रुपये हर मजदूर के वेतन में से हर माह इसके लिये कटते रहे हैं। संचालन खर्च के नाम से दो रुपये अलग से भी तनखा से लिये जाते हैं। सोसाइटी संचालन में हालाँकि मजदूर भी रखे गये हैं पर बागडोर मैनेजमेन्ट के हाथ में है और इस समय परसनल मैनेजर कर्ता-धर्ता है। मजदूरों का जो पैसा जमा है उस पर 4 प्रतिशत ब्याज दिया जाता है लेकिन मजदूर जो कर्ज लेते हैं उस पर उन्हें 12 प्रतिशत ब्याज देना पड़ता है। कर्ज किस्तों में तनखा से काटा जाता है। किसी मजदूर के रिटायर होने अथवा मरने पर वैलफेयर सोसाइटी के मुनाफे में से 15 हजार रुपये दिये जाते हैं। कुछ समय पहले बीमारी से मरे तीन मजदूरों के इन पैसों के गबन की बात सामने आई। सोसाइटी का हिसाब देने की आवाजें उठी। छह महीने से वैलफेयर सोसाइटी के नाम 50 रुपये तनखा में से कटने बन्द हैं पर संचालन खर्च वाले दो रुपये कटते हैं। बताते हैं कि सोसाइटी में 60-70 लाख रुपये हैं और इन में से 20 लाख रुपये कम्पनी इस्तेमाल करती है तथा 40-50 लाख रोटेशन में हैं। इधर मई में हिसाब के नाम पर जो पर्चियाँ दी गई हैं उनके अनुसार हर मजदूर को 5-10 हजार रुपये का नुकसान है। लाखों का गबन.... सोसाइटी समाप्त कर पैसे लौटाने की बात बढी। परसनल मैनेजर, जो कि वैलफेयर सोसाइटी का महासचिव भी है, द्वारा पैसे नहीं हैं कह कर मजदूरों को कर्ज देने से इनकार ने 20 मई को आग में घी डालने का काम किया।

"फैक्ट्री से बाहर बैठने में फँसते जाने के अहसास ने 2 जून को 2 निलम्बित को ड्युटी पर लेने और 3 के बारे में आश्वासन पर रात की शिफ्ट में फैक्ट्री में उत्पादन शुरू हो गया।"

# मसला यह व्यवस्था है...(पेज एक का शेष)

से बचने-टिके रहने-कुछ स्थिरता-कुछ चढने के लिये किये जाते प्रयासों में होती पीड़ा को छिपाते हैं, वस्तुओं से पीड़ा को ढकने की कोशिश करते हैं। बहुत भारी दिक्कत तब होती है जब हम नीचे खिसकने-कुछ स्थिरता-कुछ चढने के प्रयासों में होती पीड़ा को आदर्श प्रस्तुत करते हैं, पीड़ा का महिमामंडन करते हैं। प्रगति-विकास का अर्थ है : बढता विनाश।

● *इस व्यवस्था से निराशा स्वागत योग्य है पर हमें अधिक आवश्यकता आशा की है। व्यवस्था परिवर्तन की राहों पर बढना, नई समाज रचना की दिशा अपनाना आशा के, आशा के निर्माण के आधार लगते हैं।*

*इस सन्दर्भ में उँगली पर कंकड़ उठाना, तालमेलों से उँगलियों पे कंकड उठाने द्वारा पहाड़ का नामोनिशान मिटाना प्रेरक हो सकता है।*

*आइये अपने स्वयं के जीवन को देखें। अपने जैसों के जीवन को देखें। अपने को इक्कीस और अपने जैसों को उन्नीस दिखाने की कोशिशों की कोई तुक नजर आती है क्या? viuh- अपनी लाचारियों और पीड़ाओं पर पर्दे डालने की बजाय उन्हें उजागर करना कैसा रहेगा? हकीकत से नजरें चुराने की बजाय हकीकत से आँख मिलाना वहशी हकीकत को बदलने की दिशा में पहला कदम नहीं है क्या? (जारी)*

# लखानी शूज

**लखानी रबड़ वर्क्स मजदूर :** "प्लॉट 234 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में अक्टूबर 03 से उत्पादन के लिये बहुत ज्यादा मारामारी है। हम पर काम का बोझ हद से ज्यादा लाद रखा है।

"लखानी रबड़ वर्क्स में 4 विभाग हैं – मिक्सिंग डिपार्ट, मोल्डिंग प्रेस विभाग, होज पाईप सेक्शन और पैकिंग विभाग। फैक्ट्री में 150 स्थाई और 150 कैजुअल वरकर काम करते हैं। बदबूदार और गर्म काम है – गर्मियों में बिलकुल बरदाश्त से बाहर हो जाता है। कई कैजुअल तो 2-4 दिन बाद फैक्ट्री छोड़ जाते हैं।

"मोल्डिंग में 7-8 महीने 3 शिफ्ट के बाद अक्टूबर 03 से 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। होज पाइप सैक्शन में 8½ घण्टे की दो शिफ्ट थी: सुबह 8½ से शाम 5 तक और शाम 5 बजे से रात डेढ बजे तक लेकिन अक्टूबर 03 से 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं – सुबह 8½ से रात 8½ तक और रात 8½ से अगले रोज सुबह 8½ बजे तक। मिक्सिंग विभाग में लगातार 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। पैकिंग विभाग में एक ही शिफ्ट है जो शुरू होती है सुबह 8½ बजे और उसके समाप्त होने का कोई समय नहीं है ....

"पैकिंग वाले बन्दे बहुत-ही परेशान हैं। हर रोज उन्हें 12-14 घण्टे जबरन ओवर टाइम काम के लिये रोकते हैं – जब-तब लगातार 24 घण्टे काम करवाते हैं और सुबह 8½ बजे छूटने पर फिर सुबह 10 अथवा 12½ बजे से ड्युटी करने को मजबूर करते हैं। 20-22-24 घण्टे रोज काम कौन कर सकता है? 20-22-24 घण्टे लगातार काम करवाती लखानी मैनेजमेन्ट एक कप चाय तक नहीं देती, भोजन के पैसे तो बहुत दूर रहे। काम का बोझ इतना ज्यादा है कि पानी पीने तक का समय नहीं। भूखे-प्यासे 20-22 घण्टे काम करने और सोने को नहीं मिलने से तबीयत खराब हो जाती है।

"पूरी फैक्ट्री में ओवर टाइम का इतना जोर है कि महीने में दो रविवार को भी 12-12 घण्टे काम करना पड़ता है – पैकिंग विभाग में तो किसी रविवार को छुट्टी नहीं होती परन्तु मिक्सिंग, मोल्डिंग व होज सैक्शन में शिफ्ट बदलनी पड़ती है इसलिये दो रविवार को छुट्टी करनी पड़ती है। लखानी मैनेजमेन्ट कहती है कि ओवर टाइम काम के पैसे डेढ की दर से देती है पर वास्तव में यह सवा की दर से भुगतान करती है जबकि कानून डबल रेट से पैसे देने का है। और, अप्रैल माह में करवाये ओवर टाइम के पैसे आज 28 मई तक नहीं दिये हैं।

"मिक्सिंग विभाग में 5 मशीनें हैं, मोल्डिंग में 30 से ज्यादा मशीनें हैं और होज सैक्शन में 12-13 मशीनें हैं – लखानी रबड़ वर्क्स में 100 से ज्यादा वरकर मशीन ऑपरेटर हैं परन्तु .... परन्तु लखानी मैनेजमेन्ट अनुसार फैक्ट्री में सब मजदूर अकुशल हैं, सब हैल्पर हैं।"

# अनुभव-मन्थन-मनन-विचार

**जी के एन ड्राइवशाफ्ट मजदूर** : "प्लॉट 270 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 3 नई मशीनें आ गई हैं तथा और के आने की बात है। एक नई मशीन 9 ऑपरेटरों को फालतू बनाती है। हमारी नौकरी पर खतरा बढ गया है। कम्पनी ने डिप्लोमा वाले 4 हजार रुपये महीना में ट्रेनी के तौर पर रखे हैं और उन पर उत्पादन बढाने के लिये दबाव डाल कर स्थाई मजदूरों तथा ट्रेनी डिप्लोमा वालों को आपस में लड़ाने की चाल मैनेजमेन्ट चल रही है। आई.टी.आई. वालों से जी के एन में अप्रेन्टिसशिप करवाने के बाद उनमें से 10 को ठेकेदार के जरिये रखा है और उन से मशीनें चलवाते हैं पर उन्हें मात्र 3000 रुपये महीना तनखा देते हैं। कम्पनी इस प्रकार मजदूरों के बीच भेदभाव तो करती ही है, इधर अवार्ड में स्टाफ और वरकरों में भी भेदभाव किया है। अवार्ड में पैसे बराबर-बराबर देने थे पर अप्रैल में दिये अवार्ड में स्टाफ वालों को 15-20 हजार रुपये दिये और स्थाई मजदूरों को 5-6 हजार रुपये ही।"

**कैलसन आटोमोटिव वरकर** : "प्लॉट 136 डी.एल.एफ. एरिया स्थित फैक्ट्री में मैनेजमेन्ट ने 19 जनवरी से 8 स्थाई मजदूरों की ले-ऑफ आरम्भ की और 45 दिन लगातार ले-ऑफ के बाद उनकी छँटनी कर दी। दो यूनियन नेताओं को निलम्बित कर फिर मार्च के आरम्भ में कम्पनी ने 4 अन्य स्थाई मजदूरों की ले-ऑफ आरम्भ कर दी। मैनेजमेन्ट व यूनियन में समझौता नहीं हुआ और फैक्ट्री में गुण्डे ला कर 24 मार्च को मैनेजमेन्ट ने मारपीट करवाई। गम्भीर चोट वाले 4 मजदूर जिला अस्पताल में भर्ती किये गये। मारपीट के बाद सब स्थाई मजदूर फैक्ट्री से बाहर आ गये और तब से आज 9 मई तक हम फैक्ट्री के बाहर गेट पर बैठे हैं। यूनियन ने अदालत से नई भर्ती के खिलाफ स्थगनादेश लिया हुआ है पर कम्पनी ने गुण्डों की छत्रछाया में 25-30 लोगों को फैक्ट्री में रखा है। यह लोग और ठेकेदारों के जरिये रखे वरकर 24 मार्च से फैक्ट्री के अन्दर ही रह रहे हैं — फैक्ट्री में ही नहाना, खाना, सोना और काम करना।"

**कृष्णा ट्रिम मजदूर** : "प्लॉट 77 सेक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में 12-14 घण्टे प्रतिदिन काम के बदले महीने में 2 हजार रुपये देते थे। पाँच-छह वर्ष से लगातार काम कर रहे मजदूरों को भी कम्पनी अस्थाई श्रमिकों की श्रेणी में रखती थी। छुट्टी ले कर घर जाने पर लौटने में एक-दो दिन की देरी पर नौकरी से निकाल देते थे। वर्दी-जूते नहीं ..... राहत के लिये दिसम्बर 03 में हम एक यूनियन के सदस्य बने — फैक्ट्री में कार्यरत 150 में से 135 ने यूनियन के फार्म भरे। जनवरी में 100 रुपये प्रति मजदूर, फरवरी में 200 रुपये प्रति मजदूर और मार्च में 100 रुपये प्रति मजदूर हम ने यूनियन को चन्दा दिया। यूनियन ने फरवरी में कम्पनी को माँग-पत्र दिया और पहली मार्च को मैनेजमेन्ट ने यूनियन से 15 दिन का समय माँगा। सोमवार, 15 मार्च को सुबह हम ड्युटी के लिये पहुँचे तो मैनेजमेन्ट ने 29 मजदूरों का गेट रोक दिया — इन लोगों की यूनियन के सदस्य बनाने में सक्रिय भूमिका थी। गेट रोके जाने के विरोध में बाकी मजदूर भी फैक्ट्री से बाहर आ गये — मात्र 8-10 अन्दर रहे। फैक्ट्री गेट पर 15 मार्च से धरना आरम्भ। कम्पनी ने अप्रैल में गुण्डों से धरने पर हमला करवाया — सैक्टर-55 पुलिस ने शिकायत तक दर्ज नहीं की। न्यायालय ने कम्पनी के आवेदन पर मजदूरों को फैक्ट्री गेट से दूर, बहुत दूर रहने के आदेश दिये हैं। श्रम विभाग के एक अधिकारी का पुत्र फैक्ट्री में ठेकेदार है। आज 9 मई को भी हम फैक्ट्री से बाहर हैं।"

**न्यू एलनबरी वरकर** : "14/7 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में पहली मई को मैनेजमेन्ट ने शर्तों पर हस्ताक्षर करने को फैक्ट्री में प्रवेश के लिये एक अनिवार्यता के तौर पर पेश किया। यूनियन ने दस्तखत करने का विरोध किया — 226 स्थाई मजदूरों में से मात्र 35-40 हस्ताक्षर कर फैक्ट्री में गये और बाकी लोगों ने दस्तखत नहीं किये व फैक्ट्री से बाहर रहे। आज 17 मई को भी हम फैक्ट्री से बाहर हैं।"

**टेकमसेह मजदूर** : "मैनेजमेन्ट ने 20 मई को यूनियन लीडरों को मीटिंग के लिये बुलाया और पत्र दिया कि सरकार से 350 मजदूरों की छँटनी के लिये आवेदन किया है। अगले रोज लीडरों ने गेट मीटिंग की और कम्पनी को कोसा।

"व्हर्लपूल में ढाई हजार मजदूरों की छँटनी के बाद कम्प्रेसर डिविजन टेकमसेह कम्पनी बनी थी। यूनियन के संग एग्रीमेन्टों द्वारा उत्पादन में भारी वृद्धि और तालाबन्दी-सरकार से छँटनी की अनुमति-वी.आर.एस. के सिलसिले के जरिये आधे स्थाई मजदूरों को निकाल कर संख्या 800 कर चुकी कम्पनी अब इन 800 में से भी 350 को निकालने पर आ गई है।

"नई छँटनी के लिये घाटे को कम्पनी कारण बता रही है पर कुछ तथ्य यह हैं : 1. एक नये कम्प्रेसर का उत्पादन जिसका वजन 2 किलो कम है, पुर्जे कम हैं और निर्माण में ऑपरेशन्स कम हैं; 2. पिछली मैनेजमेन्ट-यूनियन एग्रीमेन्ट में बढा कर निर्धारित किये 4000 कम्प्रेसर प्रतिदिन की जगह 5000 कम्प्रेसर प्रतिदिन बनाये जाना ; 3. अधिक मुनाफा। यह तीन कारण यह नई बलि माँगते लगते हैं।"

**क्लास वरकर** : "15/3 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में डेढ वर्ष से उत्पादन कार्य नहीं हो रहा था। बोनस के बारे में लीडरों के निलम्बन पर यूनियन ने 19 मार्च को जो हड़ताल की थी वह आज 17 मई को भी जारी है। सब मजदूर बाहर फैक्ट्री गेट पर बैठे हैं।"

**हैदराबाद इन्डस्ट्रीज मजदूर** : "घातक एस्बेसटोस का धड़ल्ले से उत्पादन में इस्तेमाल करती कम्पनी में तीस साल से ऊपर नौकरी वाले मजदूरों की तनखा भी 4 हजार रुपये से कम है। जो हैल्पर लगता है वह 40 वर्ष नौकरी के बाद हैल्पर के तौर पर ही रिटायर होता है। छुट्टी? संसद के लिये चुनाव के दिन भी फैक्ट्री में छुट्टी नहीं रहती। इधर मैनेजमेन्ट-यूनियन दीर्घकालीन समझौता अटका हुआ है। पिछली एग्रीमेन्ट के 1055 रुपये की जगह इस बार कम्पनी तीन वर्ष में 500 रुपये बोल रही है। यूनियन ने दबाव के लिये 21 से 27 अप्रैल तक फैक्ट्री में टूल डाउन हड़ताल करवाई और फिर सरकार से आश्वासन के बाद उत्पादन चालू करवा दिया। कम्पनी ने टूल डाउन के दिनों की हमारी तनखा काट ली है।"

**एस्कोर्ट्स वरकर** : "तथ्य यह है कि पाँच साल हो गये हैं और हमारी तनखा में एक पैसा नहीं बढा है। 'नौकरी बचाना' मजाक बन गया है क्योंकि वास्तव में यह 'जब तक कम्पनी की हालत ठीक नहीं होगी तब तक आर्थिक माँग नहीं करेंगे' वाला जाल है। वैसे, वी आर एस के तहत नौकरियाँ खत्म करने का सिलसिला लगातार जारी रहा है।

"अब 175-200 ट्रैक्टर प्रतिदिन बन रहे हैं पर कम्पनी कहती है कि हालत ठीक नहीं है। सामान्य तौर पर एक लाख की जगह अब डेढ-पौने दो लाख शॉकर प्रतिमाह बन रहे हैं पर कम्पनी कहती है कि शॉकर डिविजन में घाटा है। रिटायर व वी.आर.एस. द्वारा स्थाई मजदूर कम हो जाने और उत्पादन में भारी वृद्धि के दृष्टिगत कैजुअल वरकर फिर एस्कोर्ट्स में बड़ी संख्या में भर्ती किये गये हैं। कम्पनी की हालत ठीक कब होगी?

"दरअसल मैनेजमेन्ट और यूनियन का तरीका मजदूरों को मोहरे बना कर शतरंज खेलना लगता है जिसमें मात मजदूरों की ही होती है। किसी न किसी लीडर द्वारा पँगा लेना —अधिकारी को गाली देना, थप्पड़ मार देना— और निलम्बित हो जाना। बड़े नेताओं द्वारा 'गलती' के लिये निलम्बित लीडर को मजदूरों के सामने झाड़ना और कम्पनी से बातचीत के बाद कहना कि मैनेजमेन्ट मानती ही नहीं। फिर 'साथी की नौकरी बचानी है', मामले को सम्भालना है के नाम पर मजदूरों को नुकसान पहुँचाने वाली कम्पनी की शर्तें मनवाना। थर्ड प्लान्ट में, फार्मट्रैक में, रेलवे डिविजन में यह रंग-ढंग 'यूनियन में फूट है' की आड़ में छिप जाते थे पर अब तो 40 के 40 नेता एक हैं। दाल में काला साफ नजर आने लगा है। इन 7-8 महीनों में एनसीलरी (एस्कोर्ट्स ऑटोमोटिव्स) के मामले के बाद क्लास **(बाकी पेज दो पर)**

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। **RN 42233** पोस्टल रजिस्ट्रेशन **L/HR/FBD/73**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।